Volume-2, Issue-11, November-2015 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

Available online at: www.rhimrj.co.in

आधुनिक भारतीय समाज और वैवाहिक समायोजन

डॉ. राजकुमार सिंह बोलिया

व्याख्याता, समाजशास्त्र, मा.ला.व. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

प्रस्तावना –

जीवन में अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति 'मानव' समाज में ही रहकर पूरी करता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के बीच व्यक्तियों को अनेक प्रकार के समझौते एवं सामंजस्यों से गुजरना पड़ता है। कुछ के साथ व्यक्ति हंसी खुशी से समायोजन कर लेता है और कुछ से समायोजित करने में व्यक्ति को बहुत ही समस्या आती है। इन्हीं समायोजनों में सबसे बड़ा समायोजन वैवाहिक समायोजन को माना जाता है। विवाह समाज के द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसी संस्था है जो दो विषमलिंगियों को यौन सम्बन्ध स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान करती है, उन्हें स्वतंत्र करती है। विवाह के बाद पति–पत्नी के रूप में दोनों को प्रस्थिति प्राप्त होती है और वे विवाह के पश्चात एक सुखी वैवाहिक जीवन का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ते हैं। समायोजन को हम एक सुखी वैवाहिक जीवन का मूलाधार मानते हैं। यही वह मूल मंत्र है जो एक अच्छे और सुगम गृहस्थ जीवन का रास्ता खोलता है। पति–पत्नी का जीवन समायोजन का जीवन माना जाता है जो जोड़े इन समायोजनों को सफलतापूर्वक करते है वे सुखी, समृद्ध और प्रसन्न रहते हैं। इसके विपरीत जो जोड़ा समायोजन करने में असफल होता है वे दुःखी, तनावों से घिरे हुये एवं अप्रसन्न रहते हैं। समायोजित जोड़ा न केवल स्वयं में सुखी रहता है वरन् वे समाज को भी सुखी व प्रसन्न रखता है। आने वाली पीढ़ियों को भी समाज का उपयोगी सदस्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवाह को सर्वोच्च मानवीय सम्बन्ध भी माना गया है जिसमें भौतिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आत्मिक जीवन के पहलू अर्न्तःनिहित होते हैं। वैवाहिक समायोजन दो अलग–अलग पृष्ठभूमियों से, दो अलग–अलग सांस्कृतिक वातावरण से एवं दो अलग–अलग परिवारों से आने वाले व्यक्तियों का समायोजन होता है। दोनों को ही एक–दूसरे के अलग–अलग स्वभावों से, व्यवहारों से, विचारों से, आदतों से, रूचियों आदि से समायोजन करना पड़ता है। इन्हीं वैवाहिक समायोजनों पर ही पारिवारिक जीवन की सफलता निर्भर करती है। वैवाहिक समायोजन जीवन पर्यन्त तक चलने वाली एक लम्बी प्रक्रिया है। इसलिए हम यह कह सकते है कि विवाह पति–पत्नी के समायोजन का ही एक विषय है।

यद्यपि पूर्ण रूपेण समायोजन असंभव है क्योंकि पति–पत्नी दोनों का ही अपना–अपना व्यक्तित्व होता है। फिर भी अगर वैवाहिक जीवन को सुखी एवं सफल बनाना है तो अधिक से अधिक समायोजन करना ही चाहिये। वर्तमान समय में वैवाहिक समायोजन एक बहुत महत्वपूर्ण समस्या बनी हुयी है। वर्तमान आधुनिक समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं स्वइच्छा सर्वोपरि होती जा रही है। जिसके परिणाम के रूप में तलाकों की संख्या में निरन्तर बढ़ोतरी होती जा रही है।

समायोजन शब्द समाजशास्त्रीय की अपेक्षा मनौवैज्ञानिक अधिक है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने मौलिक या सामाजिक पर्यावरणों से स्वस्थ व सहयोगी सम्बन्ध स्थापित करता है। जब एक पुरूष व एक स्त्री वैवाहिक सम्बन्धों में प्रवेश करते है तो उनकी अपनी कुछ इच्छाएं, उमंगे एवं अपेक्षाऐं होती है। इनकी पूर्ति समायोजन के द्वारा ही संभव हो सकती है इसीलिए कूज ने लिखा भी है – ''पति पत्नी द्वारा उनके विवाह में की गई अपेक्षाओं की पूर्ति ही वैवाहिक समायोजन है।''

वैवाहिक समायोजन के मापदण्ड –

वैवाहिक समायोजन को मापने का कोई उचित मापदण्ड हमारे पास नहीं है परन्तु तलाक/विवाह विच्छेद के आधार पर हम कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। फिर भी कुछ ऐसे मापदण्ड हैं जिनसे वैवाहिक समायोजन का हम मूल्यांकन कर सकते हैं, जैसे –

1. विवाह का स्थायित्व यानि सफल विवाह वो माने जाते हैं जो जीवनपर्यन्त तक स्थायी रहते हैं, उनमें बीच में कोई पृथक्करण या तलाक नहीं होता है।

2. विवाहित जोड़े का सुखी होना मतलब पति या पत्नी अपने विवाह से स्वयं कितने सुखी हैं इस आधार पर भी समायोजन को समझ सकते हैं।
3. पति पत्नी के व्यक्तित्व का विकास के बारे में हम यह अर्थ निकाल सकते हैं कि यदि पति पत्नी और बच्चों का उचित विकास हो रहा हो तो ऐसा परिवार सुखी माना जाता है।
4. विवाह में संतुष्टि का सम्बन्ध यौन संतुष्टि से है। यदि पति–पत्नी अपने यौन सम्बन्धों से संतुष्ट हैं तो उनका जीवन समायोजित माना जा सकता है।
5. सामाजिक अपेक्षाऐं यानि समाज की अपेक्षाओं पर यदि वे खरे उतरते हैं तो उनमें समायोजन का भाव दिखाई देता है।

आज के इस तकनीकी युग में इन मापदण्डों के आधार पर भी अनेक उदाहरण ऐसे देखे जा सकते हैं जो इन मापदण्डों से इत्तर ही इशारा करते हैं। आज तलाकों एवं विवाह विच्छेदों की भरमार दिखायी दे रही है। शादी के दूसरे दिन से लेकर 40/50 साल तक के वैवाहिक जीवन से भी लोग पृथक हो रहे हैं, तलाक ले रहे हैं। इन्दौर की शाहबानो को तलाक विवाह के 43 साल बाद दिया गया। सामान्य जन से लेकर नेताओं, अभिनेताओं एवं उद्योगपतियों के बीच होने वाले तलाक प्रकरणों से कुछ भी निष्कर्ष निकालना बेहद जटिल कार्य है।

प्राचीन भारतीय समाज में वैवाहिक समायोजन, हरेक विवाह में पाया जाता था। अगर थोड़ा बहुत तनाव या संघर्ष उत्पन्न हो भी जाता तो वो जोड़ा इसे भूलकर फिर रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की तरफ लौट जाता था। परन्तु वर्तमान समय में ऐसे–ऐसे भी उदाहरण हमारे समाज में प्रस्तुत हो रहे हैं कि अगर पति–पत्नी दोनों कमाने वाले हैं और वे बाजार में साथ में सामान लेने जाते हैं तो किसी भी वस्तु के दाम दोनों आधे–आधे करके देते हैं। हालांकि इस तरह के उदाहरण अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं लेकिन फिर भी ये उदाहरण तो है ही। इस तरह से शिक्षा भी समायोजन के संदर्भ में धत्ता बताती फिर रही है। शिक्षित व्यक्तियों में अहंकार और अहम् के चलते भी वैवाहिक समायोजन वर्तमान समय की एक बहुत बड़ी चुनौती बना हुआ है। आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में होने वाले तलाकों का प्रतिशत लगभग 50 माना जाता है तो वहीं आज भी भारत में केवल 1 प्रतिशत लोग ही तलाक तक पहुंच पाते हैं। यह आंकड़ा विश्व के देशों की तुलना में हमारे देश में बहुत कम है फिर भी जनसंख्या के हिसाब से यह बहुत ज्यादा है। आज भी हमारी संस्कृति में विवाह को धार्मिक संस्कार की मान्यता मिली हुई है और विवाह को जन्म जन्मान्तर का साथ माना जाता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वैवाहिक समायोजन एक बेहद जटिल एवं कठिन कार्य है जिसमें बहुत ही चतुराई के साथ सावधानीपूर्वक रूप से प्रयत्न करना पड़ता है। वैवाहिक समायोजन अचानक एवं एकदम से होने वाली प्रक्रिया न होकर यह धीरे–धीरे आकार लेने वाली प्रक्रिया है। इसमें सबसे ज्यादा आवश्यकता एक दूसरे के प्रति संतोष त्याग एवं घनिष्ठ प्रेम की भावना की है। इसका सम्बन्ध समर्पण, संजीदगी, अपनत्व एवं लगाव से है। इसको बाहरी दबाव व शक्ति से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वैवाहिक समायोजन को प्राप्त करने का सबसे सरल तरीका है कि अपने साथी से वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम उससे अपने प्रति करवाना चाहते हो। दोनों ही साथी में समानता की भावना एवं मानसिक घनिष्ठता होना चाहिये। एक–दूसरे के प्रति गहन विश्वास की अनुभूति होना चाहिए। सुखी एवं सफल वैवाहिक जीवन के लिये पारस्परिक सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार एवं सहयोगात्मकता की भावना महत्वपूर्ण तत्व है। यदि इन भावनाओं को अंगीकार कर लिया जाये तो वैवाहिक समायोजन को सहजता एवं सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1. हॉरनेल एण्ड ऐला हार्ट (1941) – पर्सनेलिटी एण्ड द फैमिली, बोस्टन डी.सी. हीथ एण्ड कम्पनी
2. डॉ. लौरा सिंगर – इण्डियन एक्सप्रेस न्यूज रिपोर्ट/मैरिज नॉउ एनाक्रॉनिस्टीक, 28 फरवरी 1973
3. एर्ल लोमोन कूस (1958) मैरिज
4. हन्नथ स्टोन एण्ड अब्राहम स्टोन (1952) – ए मैरिज मेन्युअल
5. बी. रसैल (1955) मैरिज एण्ड मोरॉल्स
6. बाली ए., धींगरा आर. एण्ड बारू ए. (2010) मैराईटल एडजस्टमेन्ट ऑफ चाईल्डलेस कपल्स. जर्नल ऑफ सोशल साईंस : 24 (1)

7. चौधरी एन.पी. एण्ड पटेल एच. (2009) – ए स्टर्डी अबाउट मैराईटल एडजस्टमेन्ट अमंग फिमेल ऑफ अरबन एण्ड रूरल मेहसाना (गुजरात), इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल, 2 (7) 11–12.
8. गोयल एस. एण्ड नारंग डी.के. (2012) जेण्डर डिफरेन्सेस इन मैराईटल एडजस्टमेन्ट, मेन्टल हेल्थ एण्ड फ्रस्ट्रेशन रिएक्शनस ड्यूरिंग मिडिल ऐज आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ ह्यमेनिटिज एण्ड सोशल साईंस, 1 (3), 42–49.